Maithili (Hons)

Paper - I

Prof. Rai Kumari [illegible]

J.S. College, [illegible]

दशावधान ठाकुरक साहित्यिक परिचय लिखू ।

—o—

उत्तर — दशावधान ठाकुरक प्राचीन गीत रचना हमरा सभकेँ पाँचटा उपलब्ध भेल अछि । एहि सभ गीत पर विद्यापतिक गीत परम्पराक प्रभाव बुझना जाइछ । एहिमे दशावधान ठाकुर, विद्यापतिक आश्रित बुझल जाइत छल, मुदा ई भ्रान्ति : भ्रामक छल । पञ्जीमे तीन ओर दशावधान उपाधिक व्यक्ति भेटैत अछि । प्रथम करकासोदपुर मूलमे हरिपतिक बालक परस्थ ओ भिन्न छलाह । दोसर गढ़माण्डर मूलक कान्हपतिक बालक नरपति जे दशावधान कहबथि । हिनक आविर्भाव काल 1500 ई० छल, मुदा ई ठाकुर कहबैत छलाह वा ~~[illegible]~~ नहि से अज्ञात अछि । तेसर दशावधान छलाह बहेराढ़ी मूलक प्रभाकरक बालक । प्रभाकरक पितामह बराहक जेठ भाए बिरखूक कन्या उमाकेँ शिवसिंहक पाँचम विवाह छल । हिनक आविर्भाव काल 1500 ई० सँ पूर्व नहि रहल होएत । बराहक विवाह छल ठक्कुरक पितिऔसिमे ओ महाराज महेश ठाकुर रुद्रक दौहित्र छलाह । दशावधान ठाकुर म० महेश ठाकुर सँ किछु दिनक जेठ छलाह । एहि तथ्यकेँ डॉ० रामदेव झा प्राचीन गीतावलीक प्राक्कथनमे कहैत छथि — मैथिली कवि आरम्भमे राजपुरुषक आलमसाहक आश्रयमे रहि पाँछाँ बिआलिस ~~[illegible]~~

चान्दशायक आश्रयमे छोलाह ओ चान्दशायकु पुत्र नरोत्तमकु शिष्य म छोलाह। अतः 16म शताब्दि हिनक समय अनुमानित भ सकैछ। नरोत्तम ठाकुर जन्म प्रायः 1542 ई० कँ लगपास भेल छल।

दोसर आलमसाह छल शाजीपुरकु शासक अकरा मखदूम आलम सेहो कहल जाइत छलैक। हिनक शासन 1536 ई० कु लगपासमे छलैक। एतावता दशावधान ठाकुर 16म शताब्दीक मानल जा सकैत अछि। दशावधान मैथिल कविक उपाधि नहि अथवा छलानि तँइ कोनो भिन्न व्यक्ति [illegible] छलाह। सत्य जे किछु होउ मुदा प्राचीन मैथिली साहित्यमे हिनक रचना महत्वपूर्ण अछि। यथा –

देखाभि तोहरि धनि, अनुदिन आड़ बिनि जनि छिन उगालि तारा।
तिमरो न देहरि, तेज तुअ पथ हेरि नयन बरस जलधारा॥
माधव आबे नहि अच्छित विदेस।

ई गीत विनास रागक थिक। एहिमे शृंगारमे वियोगकेँ देखाओल गेल अछि। नायिका, नायकक बाट जोहैत देहरि पर छथि। अपन प्रियतम ~~माधव~~ माधवकेँ उपराग देत करैत छथि – आब नहि अच्छैत अछि विदेश रहब तेँ शीघ्र मिलनकेँ कामना कैलनि अछि।

एक पसारनिक गीत

अछि बराड़ीमे छथि यथा -

ए धनि बनलि पसाहनि तोहि रे ।
हेरतहिँ युवक हृदय जा मोहि रे ॥
सिन्दुर सिम सिरँ चादन बिन्दु रे ।
कुच तम रुधिरे धार पिबि इन्दु रे ॥
अंजनमे रंजित लोचन कोरँ रे ।
भ्रमर सुतल जनि कमलक कोरँ रे ॥

— अभिनव रीतिक पसारनिक गीत

अछि। गीतक भाषा मधुर सरलता एवं अवाच्यक्तिमे कल्पनाक विच्छित्तिरूप रमणीयताक विशेष रूपसँ देखल जा सकैछ।

Scanned with CamScanner